राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
राजभवन, पटना–800022

ई–मेल–**pr.rajbhavan@gmail.com**
prrajbhavanbihar@gmail.com
मोबाईल–9431283596

प्रेस–विज्ञप्ति

शिक्षा से मनुष्य का सांस्कृतिक और आध्यात्मिक उन्नयन होता है–राज्यपाल

पटना, 19 जनवरी 2019

''शिक्षा से मनुष्य का सांस्कृतिक और आध्यात्मिक उन्नयन होता है। भारतीय शिक्षा एवं संस्कृति से त्याग, तपस्या, सदाचरण, राष्ट्रप्रेम एवं ईमानदारी की सीख मिलती है।'' –उक्त उद्‌गार महामहिम राज्यपाल ने आज अर्जुननगर, लखनऊ में भाऊराव देवरस सेवा न्यास के तत्त्वावधान में महामना शिक्षण संस्थान के भव्य शिलान्यास समारोह को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

महामहिम राज्यपाल, बिहार श्री टंडन ने कहा कि भारतीय संस्कृति ज्ञान, प्रेम, त्याग और आध्यात्मिक विकास पर जोर देती है; जबकि पाश्चात्य दर्शन भौतिकवादी होने के कारण मनुष्य का सर्वांगीण विकास नहीं कर पाता। उन्होंने कहा कि आज भारतवर्ष का पुनरोदय हो रहा है। भारतीय नेतृत्व विद्यार्थियों और युवाओं की ओर काफी आशा भरी निगाहों से देख रहा है। आज देश में सर्वत्र उत्साह और जागृति का वातावरण है। सब जगह शांति, प्रेम, सहयोग और सद्‌भावना के स्वर सुनाई पड़ रहे हैं। आज पूरा विश्व भारत को काफी सम्मान और विश्वास के साथ देख रहा है। भारत भी 'वसुधैव' कुटुम्बकम्‌ की भावना से अभिप्रेरित होकर समस्त संसार में बंधुत्व का प्रसार कर रहा है। राज्यपाल ने कहा कि आज समाज के अभिवंचित वर्गों को भी शिक्षा और स्वास्थ्य–सुविधाएँ सहज रूप से उपलब्ध हो रही हैं। 'आयुष्मान भारत योजना' जैसी अनेक बृहत्तर योजनाओं के माध्यम से 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का नवनिर्माण हो रहा है।

राज्यपाल ने कहा कि भारतवर्ष के तेजी से हो रहे अभ्युत्थान में यहाँ के विद्यानुरागी बच्चों की अग्रणी भूमिका है, जो चरित्रवान बनने के साथ–साथ, आधुनिक ज्ञान–विज्ञान और नयी कौशलपूर्ण विद्याओं से अपने को जोड़कर अपना, अपने समाज का और पूरे राष्ट्र का कल्याण कर रहे हैं। कार्यक्रम में बोलते हुए राज्यपाल ने पं॰ मदनमोहन मालवीय का सादर स्मरण करते हुए उनके शिक्षा और राष्ट्रप्रेम की भावना से प्रेरणा ग्रहण करने का आह्‌वान किया।

कार्यक्रम में आर॰एस॰एस॰ के सह सर कार्यवाह डॉ॰ कृष्ण गोपाल जी, पद्‌मश्री श्री ब्रह्मदेव शर्मा भाईजी, महामना शिक्षक संस्थान के अध्यक्ष श्री रामनिवास जैन जी, सचिव श्री रंजीव तिवारी जी, सदस्य डॉ॰ नरेन्द्र अग्रवाल जी आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

.....